सृजनकर्ता शिव रहस्यमयी सृष्टि के विश्वकर्मा

राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर सहित अन्य देवता-महापुरुषों का स्मरण या तो उनकी जन्मतिथि पर होता है या निर्वाण दिवस अथवा बुद्धत्व प्राप्ति के दिन। लेकिन भारतीय संस्कृति में एकमात्र महादेव शिव ही हैं, जिनके विवाह की वर्षगांठ फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या के एक दिन पहले महाशिवरात्रि के रूप में मनाई जाती है। कारण शिव अजन्मे हैं, जगतगुरु, मृत्युंजय महाकाल हैं। न तो उनका जन्म हुआ है, न निधन क्योंकि वे स्वयं मृत्यु के देवता और मृत्युंजय हैं बल्कि एक कदम आगे मृत्यु के भी काल हैं। वे जगतगुरु हैं, इसलिए ज्ञान-कला की सभी धारायें उन्हीं से प्रकट हुई हैं। अत: उनके बुद्धत्व प्राप्ति का कोई दिवस हो ही नहीं सकता इसलिए शिव के विवाह की वर्षगांठ मनाई जाती है, जो प्रतीक है शिव और शक्ति के मिलन का, सृजन का। क्योंकि शिव ही देवता हैं, सृजन के, रचनात्मकता के, सकारात्मकता के।

- ब्र. कु. गंगाधर

हमारे यहाँ मान्यता है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (गुड़ी पाड़वा) को सृष्टि की रचना हुई, लेकिन इससे करीब डेढ़ महीने पूर्व शिवरात्रि को सृष्टि रचना का पहला क्रम पूरा हुआ, ज्योतिर्लिंग के रूप में शिव के प्राकट्य के साथ और रात्रि में शिव और शक्ति के मिलन के साथ। जब ये दो महातत्व मिले, तभी सृष्टि की रचना सम्भव हो सकी। इस अर्थ में शिवरात्रि सृजन का पहला पर्व है, इस संदेश के साथ कि सृजन से ही जीवन की सार्थकता है।

शिवरात्रि वसंत ऋतु में ही इसलिए आती है क्योंकि शिव प्रकृति के देवता हैं। वे पुरुष हैं और शक्ति प्रकृति। प्रकृति और पुरुष के मिलन पर वसंत का वैभव वास्तव में नववधू प्रकृति का श्रृंगार ही है, और चूंकि वह प्रकृति-पुरुष शिव के संयुक्त होती है, इसलिए उसके आभूषण भी नए फूल-पत्तों के रूप में नैसर्गिक ही होते हैं और विवाह के उत्सव में साक्षी बनने के लिए इस प्रकार के श्रृंगार के साथ वसंत की अभिव्यक्ति देते हैं। कहते हैं कैलाश के जिस हिस्से में शिव-पार्वती निवास करते हैं, उसका नाम गंधमादन है, जहाँ हर दिन वसंत होता है।

प्रकृति से शिव का यह संबंध उनके स्वयं के श्रृंगार में भी सामने आया है जब वे जटाजूट, भस्म, चंदन, चन्द्र, गंगा, सर्प, रुद्राक्ष, बिल्वपत्र से श्रृंगारित होते हैं और वस्त्र के रूप में बाघचर्म और वाहन के रूप में नंदी का प्रयोग करते हैं, क्योंकि वे प्रकृति के देवता हैं। इस संदेश के साथ कि प्रकृति सृजन का स्रोत हैं, इसलिए वह वंदनीय हैं।

शिवरात्रि की पूजा रात्रि में करने के पीछे भी प्रतीक सृजन ही है। क्योंकि सृजन का अर्थ सिर्फ संभोग नहीं है, जिसके लिए भारतीय मनीषियों ने रात्रि के अंतिम प्रहर का समय अनुकूल माना है। कहा जाता है इस समय पैदा हुआ वंश दैदीप्यमान प्रकाश फैलाता है। इसलिए परमात्मा शिव सृष्टि कलयुग के अंत और सतयुग के आदि, जिसको घोर काल कहा गया है, में अवतरित होते हैं और इसलिए भी कि जब सारे जगत की चेतना सोई हो तब भी जो शिव की तरह चैतन्य होगा वही सच्चा सृजन कर सकेगा। इस अर्थ में शिवरात्रि सिखाती है कि जो जगत की सुप्तावस्था में भी जागृत रहता है, वही शिव की भांति सृजन और उससे आगे कल्याण कर पाता है। अर्थात् जीवन की सार्थकता ऐसे सृजन में है जो वसंत की तरह नवीनता से परिपूर्ण, रंग-सुगंध से भरा और दूसरों के लिए कल्याणकारी हो।

शिव का पूरा व्यक्तित्व इन्हीं विशेषताओं, विरोधाभासों और संदेशों से भरा है। वे पशुपति होकर प्राणीमात्र के देवता के रूप में प्राणीमात्र के प्रति प्रेम का संदेश देते सामने आते हैं तो निवास, वस्त्राभूषण और प्रयोग किये जाने वाले उपादानों के साथ प्रकृति के प्रति प्रेम का संदेश देते हैं। विरोधाभासों के रूप में एक ओर वे मृत्युंजय, महाकाल बनकर आते हैं तो दूसरी ओर सृष्टि के सृजन के पहले अपना प्राकट्य और मिलन कर सृजनात्मकता का बीजारोपण करते हैं। वे असुरों का नाश करते हुए त्रिपुरारि बनते हैं तो देवताओं और जगत की रक्षा के लिए समुद्रमंथन से निकला हलाहल विष पीते हैं। वे विष पीते ही नहीं उसे पचाते भी हैं, जो संकेत है कि जहर पीना ही बड़ी बात नहीं, पीकर पचाना बड़ी बात है और जो इसे पचा सकता है वही नीलकंठ शिव तुल्य हो सकता है। शिव और शिवरात्रि से हमें शास्त्रीय लोकाचार या पूजा-व्रत की पद्धतियां ही नहीं सीखनी चाहिए, अपितु विरोधाभासों से भरे इस जीवन और जगत में संतुलन की कला सीखनी चाहिए। प्रकृति, जल, वनस्पति और प्राणीमात्र के संरक्षण का संकल्प लेना चाहिए। जीवन में मिलने वाले विष को पीने की तैयारी और पचाने की शक्ति चाहिए। जीवन को सृजनात्मक और कल्याणकारी बनाना सीखना चाहिए अन्यथा सारी पूजा, उत्सव, व्रत और उपवास यंत्रवत ही रहेंगे और हमारे जीवन का सही दिशा में वह रूपांतरण नहीं हो सकेगा, जिसके लिए महाशिवरात्रि जैसा महापर्व आता है।

स्मृति स्वरूप ही पदमापदम भाग्यशाली हैं

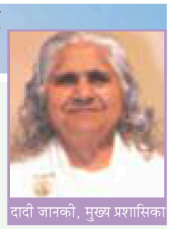
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

हम सबने ईश्वरीय स्नेह के सागर को साथी बनाया है। मैंने देखा है स्नेह और सच्चाई का सहयोग सारे ईश्वरीय परिवार को चला रहा है। सच्चाई और प्रेम के बिगर लाइफ नहीं है। कभी साधारण चलन में समय नहीं गंवाना है। 5 मिनट भी अगर साधारण चलन चलते हैं तो 5 साल के बराबर है। संगमयुग का समय बहुत वैल्युबल है। याद में रहने से करेंट मिलती है। अगर हमारी साधारण चलन हुई तो करेंट नहीं मिलेगी। जैसे बिना कनेक्शन के लाइट नहीं मिलती, तो अन्धेरे में कहां चलेंगे? चल तो रहे हैं, पैदल भी कोई चल रहा है, तो कोई प्लेन में भी चल रहा है। पैदल भी कहेगा मैं चल तो रहा हूं ना और प्लेन वाला भी कह रहा है कि मैं भी तो चल रहा हूं ना। तो हमारा पुरुषार्थ क्या है?

विश्व कल्याणकारी बाबा मेरा बाबा है। मेरा बाबा विश्व के कल्याण का कर्तव्य कर रहा है, मैं क्या कर रही हूं? दिन-रात सच्चे पुरुषार्थी को बड़ा बल मिलता है। मेहनत नहीं लगती लेकिन मोहब्बत से अच्छा पुरुषार्थ करता है। खुशी होती है, सहज लगता है। यह खुशी का अनुभव सतयुग में ले जा रहा है। शान्ति का अनुभव निर्वाणधाम में ले जा रहा है। जितना देर शान्त रहो, वाणी में कम आना, शान्तिधाम मेरा घर है, घर में आत्मा को बड़ा आराम मिलता है। कभी बेचैनी नहीं, कैसा भी शरीर हो, कुछ भी हो। संगमयुग वैल्युबल टाइम है। संकल्प भी सफल कर रहे हैं।

संकल्प में मेरा बाबा है, तो ठिकाना मिल गया। अभी कौन हैं हम? बस अन्दर से जैसे स्मृति स्वरूप बनने से लगता है, यह हमारा भाग्य है। स्मृति स्वरूप बनना माना पदमापदम भाग्यशाली बनना। हर कदम में स्मृति है और हर संकल्प में स्मृति है। तो हमारे हर कदमों में कमाई है। भले वहां बैठे भी हम याद कर सकते हैं, पर यहां आने में कमाई बहुत है, अलबेलाई नहीं चाहिए। चलो वहां भी तो बैठ सकते हैं ना! पर नहीं। बाबा हमको याद दिलाता है कि तुम आत्मा हो, पर देवता धर्म की हो, यह स्मृति अधर्म का नाश करती है, बाप के साथ हम भी पाप और भ्रष्टाचार का खात्मा करने का कार्य कर रहे हैं। सत्य स्वरूप की स्मृति से सतधर्म की स्थापना होती है।

ज्ञान स्वरूप माना शान्त स्वरूप, प्रेम स्वरूप, आनंद स्वरूप...ऐसी मीठी-मीठी बातें बाबा की जो सुनी हैं, वो अपने जीवन में लाने से जीवन हीरे जैसा बन जाता है। अगर हीरो एक्टर की चलन साधारण हो तो सब अजब खायेंगे। ऐसे बाबा के जो शब्द हैं वह भी सावधान कर देते हैं। हीरो एक्टर का ध्यान कभी इधर-उधर नहीं जा सकता, यह क्या करता, यह क्यों करता...क्योंकि डायरेक्टर का ध्यान हीरो पर है। वो अन्दर ही अन्दर देखता है मेरा डायरेक्टर क्या सोचेगा, ऐसे करुंगा तो! इसलिए साधारणता में कभी समय नहीं गंवाना। खबरदार, होशियार, सावधान रहना।

किसी ने क्वेश्चन पूछा है कि आपको कभी ख्याल नहीं आता है, अगर समझो बाबा की पधरामणि नहीं होती है तो फिर क्या होगा? बाबा खुद मालिक है, साकार में पार्ट प्ले किया फिर अव्यक्त रूप में...। हमको बाबा की जितनी पालना मिली है, उसका रिटर्न देना है, यह मेरा फर्ज़ कहता है। सोचना मेरा फर्ज़ नहीं है या इस पर चर्चा करने की ज़रूरत नहीं है। कई हैं जो चर्चा करना अपनी समझदारी समझते हैं। कहेंगे इस पर थोड़ा विचार तो करना चाहिए ना! लेकिन इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। सयानेपन से अपनी समझ चलाना नुकसानकारक है।

राजकारोबार में दिव्यता नैचुरल रूप में होगी

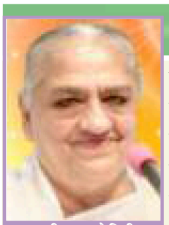
दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

प्रश्न: दादी, बाबा को शुरुआत में जब साक्षात्कार होने लगे, एक ऐसा भी साक्षात्कार हुआ जैसे कि ऊपर से तारे आ रहे हैं और जब धरती के नज़दीक पहुंचते हैं तो वो अपने असली दैवी स्वरूप धारण करके इस सृष्टि पर आते हैं, फिर उन देवताओं का आपस में इतना सुन्दर कम्यूनिकेशन जैसे कि मुख से शब्द नहीं बोल रहे हैं परन्तु जैसेकि गीत गा रहे हैं, म्यूज़िक बजता और जिस समय चलते तो उन्हों की चाल जैसेकि रास के तरीके से होती, तो यह हमने सुना है लेकिन आपने तो साक्षात्कार भी सभी बातों का किया है तो हमें आप यह बतायें कि देवताओं की आपस में कम्यूनिकेशन किस तरह से होती है?

उत्तर: अभी आप सभी अनेक बार अपने स्वर्गिक दुनिया में रहे हैं, राज्य किया है और अभी संगमयुगी रूप में बैठे हैं तो आप भी याद करो अपने देवतायी स्वरूप को। तो सभी अनुभवी होंगे। फिर भी अभी जो ये क्वेश्चन है तो वहां क्या है कि खुशी है बहुत। दु:ख का नाम-निशान ही नहीं है। तो वह खुशी की झलक जो है ना, वो चलने में, बैठने में, उठने में, मिलने में वह ऑटोमेटिकली होती है। तो जो ऑटोमेटिकली चीज़ होती है वो बहुत सुन्दर लगती है। थोड़ी बनावटी होगी तो वो फर्क हो जाता है ना। तो उनकी डायरेक्ट लाइफ ही खुशी की है, खुशी भी है और सर्व प्राप्ति स्वरूप भी है। तो जहां सर्व प्राप्तियां हैं उस सर्व प्राप्ति का फीचर्स पर असर है। एक होता है, कोई बात होती है तो खुशी होती है, लेकिन यह जीवन ही खुशी का है, इसी कारण उन्हों की जो भी चलन है ना, वो न्यारी और प्यारी है। तो आप सोचो वह कौन थे? आप ही थे ना। आपकी ऐसी लाइफ थी और हर पांच हज़ार वर्ष के बाद आपकी ऐसी लाइफ बननी ही है, अभी भी बनेगी! तो वहां जो भी होगा खुशी का रूप होगा, तन्दरुस्ती का रूप और सर्व प्राप्ति सम्पन्नता का रूप होगा।

प्रश्न: दादी, कुछ कारोबार की ज़रूरत ही नहीं होगी? और राज्य चलाने का जो कारोबार होगा...फिर जिस समय वो एक दो को देखते हैं तो उन्हों की दृष्टि कैसी होती है? एक दूसरे को किस तरह से देखते हैं?

उत्तर: कारोबार है, बच्चे पढ़ने जायेंगे लेकिन वहां पढ़ाई क्या होगी! ज्ञान तो यहां संगमयुग का ही चलता है, उसका फल है। तो पढ़ने में मेहनत नहीं, जैसे खेल होता है। जैसे आजकल पढ़ते हैं लोग तो बोझ समझते हैं। राज्य कारोबार भी सिम्पल है क्योंकि लड़ाई झगड़ा है नहीं जो सोचे क्या करना चाहिए। सर्व प्राप्तियां हैं और लोग जो हैं उनके वायब्रेशन भी शुद्ध हैं तो कुछ सोचने की ज़रूरत नहीं। नैचुरल लाइफ ही ऐसी है। तो एक दो को देख करके वायब्रेशन ऐसा शान्ति का, सुख का, आनंद का, प्रेम का आता है।

प्रश्न: तो वहां ज़्यादा साइलेंस का ही कम्यूनिकेशन होता है? और बाबा जो कहते हैं एक नैचुरल आत्मिक स्थिति होगी तो वहां का अनुभव आत्म स्मृति का कुछ अलग ही होगा? क्योंकि संगमयुग में जो हमें सोचना पड़ता है, याद रखना पड़ता है, स्मृति में पक्का करना पड़ता है आत्मिक स्मृति को, तो वहां पर उन्हों की किस तरह से आत्मिक स्मृति होगी?

उत्तर: नहीं, साइलेंस का नहीं होता है। जो कार्य है उसी रीति एक्शन होता है, समझो स्कूल में जायेंगे तो वहां साइलेंस थोड़ेही चाहिए। जैसा समय होगा वैसी एक्ट होगी, वैसे रूप होगा लेकिन खुशी वहां नैचुरल है, खुशी चेहरे में लानी है वो नहीं है, नैचुरल खुशी है। यह सोचना नहीं पड़ता है खुश रहना है, खुश हैं ही।

प्रश्न: फिर संस्कार सबके पवित्र हैं, शुद्ध और श्रेष्ठ संस्कार हैं परन्तु संस्कारों की वैरायटी कुछ नज़र आयेगी? या सबके संस्कार एक समान नज़र आयेंगे? या कुछ भिन्नता होगी संस्कारों में? मानो कि श्री लक्ष्मी है, श्री नारायण है दोनों के चाल-चलन में क्या फर्क होगा? और यह स्त्री है, यह पुरुष है यह भेद भी नहीं होगा?

उत्तर: राजा और प्रजा में फर्क तो होगा लेकिन प्रजा भी सारी खुश है ना, सर्व प्राप्ति की लहर है इसीलिए खुशी का कोई में अंतर नहीं होगा। दूसरी बात कि जैसे राजा होगा तो राजाई के संस्कार प्रजा में तो नहीं होंगे ना। श्री लक्ष्मी श्री नारायण के चाल-चलन में फर्क नहीं होगा, उनकी खुशी, उनका रूहाब वो दोनों में होगा क्योंकि दोनों ही पुरुषार्थ की प्रालब्ध में हैं इसलिए उन्हों को पुरुषार्थ करना नहीं पड़ता, नैचुरल है। स्त्री-पुरुष का नॉलेज सब है, क्योंकि दृष्टि वृत्ति में चलेंगे, कारोबार में चलेंगे तो स्त्री और पुरुष, समझो राजा और रानी है, लक्ष्मी-नारायण है तो नारायण तख्त पर बैठेगा, लक्ष्मी थोड़ेही बैठेगी!